॥ श्रीः ॥

काशी-संस्कृत-ग्रन्थमाला

१४७

(छन्दःशास्त्रविभागे (५) पञ्चमपुष्पम्)

श्रीभट्टकेदारप्रणीतः

वृत्तरत्नाकरः

'मणिमयी' हिन्दी टीकोपेतः

टीकाकारः

पं० श्री केदारनाथ शर्मा साहित्यरत्न

चौखम्बा-संस्कृत-सीरिज, बनारस-१

सं० २०११] मूल्यं ॥) [ई० १९५४

प्रकाशकः—
जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः,
चौखम्बा-संस्कृत-सीरिज आफिस,
पो० बाक्स नं० ८, बनारस

The Chowkhamba Sanskrit Series Office,
P. O. Box 8, Banaras.
1954.
(द्वितीयं संस्करणम्)

मुद्रकः—
विद्याविलास प्रेस,
बनारस-१

॥ श्रीः ॥

वृत्तरत्नाकरः

मणिमयी-भाषाटीका-सहितः

प्रथमोऽध्यायः

सुखसन्तानसिद्ध्यर्थं नत्वा ब्रह्माऽच्युताऽर्चितम् ॥
गौरीविनायकोपेतं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥ १ ॥
वेदाऽर्थशैवशास्त्रज्ञः प(ठ्ये)व्येकोऽभूद् द्विजोत्तमः ॥
तस्य पुत्रोऽस्ति केदारः शिवपादाऽर्चने रतः ॥ २ ॥
तेनेदं क्रियते छन्दो लक्ष्यलक्षणसंयुतम् ॥
वृत्तरत्नाकरं नाम बालानां सुखसिद्धये ॥ ३ ॥

चतुरानन ब्रह्मदेव तथा भगवान् विष्णुसे पूजित एवं पार्वतीजी और श्री-गणेशजीसे सुशोभित, चतुर्दश भुवनोंको सुखकारी श्री देवदेव महादेवजीको वैभवादि सुखसन्तान प्राप्तिकी सिद्धिके लिये प्रणाम करके केदारभट्ट नामक विद्वान् इस वृत्तरत्नाकर नामक छन्दोग्रन्थकी रचना करता है। श्रुतिके अर्थ वेत्ता तथा शैवशास्त्रके तत्त्वज्ञ पठ्येक अथवा पव्येक नामक एक श्रेष्ठ ब्राह्मण थे। उन्हींका पुत्र, शिवचरणारविन्दोंमें भक्ति करनेवाला, मैं केदारभट्ट नामधारी हूँ। वही (मैं ही केदारभट्ट) बालकोंको सुखसे बोध होनेके लिये, लक्ष्य और लक्षण (अर्थात् उदाहरण और स्वरूपज्ञान) से युक्त वृत्तरत्नाकर (जिसमें छन्दोंके स्वरूपवाले रत्नोंका समूह है) को रचता हूं ॥ १-३ ॥

पिङ्गलादिभिराचार्यैर्यदुक्तं लौकिकं द्विधा ॥
मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते ॥ ४ ॥

छन्दःसूत्रकर्त्ता तथा भाष्यकर्त्ता पिंगलादि आचार्योंने मात्राछन्द और वर्णछन्द दो प्रकारके लौकिक छन्द माने हैं। उन्हींका वर्णन इसमें कर रहा हूं ॥ ४ ॥

षडध्यायनिबद्धस्य च्छन्दसोऽस्य परिस्फुटम् ॥
प्रमाणमपि विज्ञेयं षट्त्रिंशदधिकं शतम् ॥ ५ ॥

इस छः अध्यायके वृत्तरत्नाकर नामक ग्रन्थमें १३६ श्लोक प्रमाणरूपमें हैं। (अर्थात्-१३६ श्लोक हैं।) ॥ ५ ॥

म्यरस्तजभ्नगैर्लान्तैरेभिर्दशभिरक्षरैः ॥
समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना ॥ ६ ॥

यथा-भगवान् विष्णुसे तीनों लोक परिव्याप्त है तथा मगणादि आठों गण और गुरु (दीर्घ) लघु (ह्रस्व) से समस्त वाङ्मय परिव्याप्त है ॥ ६ ॥

सर्वगुर्मो मुखान्तलौ यराऽवन्तगलौ सतौ ॥
ग्मध्याद्यौ ज्भौ त्रिलो नोऽष्टौ भवन्त्यत्र गणास्त्रिकाः ॥ ७ ॥

गणोंके नाम—मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण और नगण। मगणके सब अक्षर दीर्घ होते हैं यथा—वागर्था (ऽऽऽ)। आदिमें ह्रस्व यगण होता है यथा—मनीषा (। ऽ ऽ)। मध्यमें ह्रस्व रगण होता है यथा—चन्द्रिका, कौमुदी (ऽ । ऽ)। सगण अन्तमें दीर्घ होता है यथा—कमला (। । ऽ)। तगण अन्तमें ह्रस्व होता है यथा—क्षीरोद (ऽ ऽ ।)। जगणके मध्यमें गुरु (दीर्घ) होता है यथा—मनोज्ञ (। ऽ ।) भगणके आदिमें दीर्घ होता है यथा—श्रीपति (ऽ । ।)। नगणमें तीनों लघु होते हैं यथा—विमल (। । ।) ॥ ७ ॥

ज्ञेयाः सर्वान्तमध्यादिगुरवोऽत्र चतुष्कलाः ॥
गणाश्चतुर्लघूपेताः पञ्चार्यादिषु संस्थिताः ॥ ८ ॥

आर्या आदि छन्दोंमें चार मात्रावाले पांच गण हुआ करते हैं। एक सर्व गुरु (ऽऽ) दूसरा अन्त्यगुरु (। । ऽ) तीसरा मध्य गुरु (। ऽ ।) चौथा आदि गुरु (ऽ । ।) और पांचवां चारो लघुके (।।।।) स्वरूपमें होता है ॥ ८ ॥

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः ॥
वा पादान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजुः ॥ ९ ॥

अनुस्वारसहित, (अं, खं) अन्तमें विसर्गवाला। (गः, पः) दीर्घ, (चा, टा) और जिसके आगेका अक्षरसंयुक्त (विष्णु, कृष्ण) हो, तथा पादके अन्तमें रहनेवाला अक्षर, आवश्यकतानुसार, लघु भी दीर्घ होता है। गुरुका रूप वक्र (ऽ) और लघुका रूप सरल (।) होता है। कुछ लोग प्रस्तारमें

गुरुको (‿) और लघुको ऐसे (–) लिखना चाहते हैं। किन्तु आजकल यह प्रथा अप्रचलित है ॥ ९ ॥

पादादाविह वर्णस्य संयोगः क्रमसंज्ञकः ॥
पुरःस्थितेन तेन स्याल्लघुताऽपि क्वचिद् गुरोः ॥ १० ॥

पादके आदिमें रहनेवाला एक वर्णका दूसरे वर्णके साथ जो संयोग उसे छन्दशास्त्री लोग 'क्रम' नामसे पुकारते हैं। यह 'क्रम' नामक संयोगसे परे होनेपर कहीं-कहीं पूर्वमें स्थित गुरु भी लघु हो जाता है। किन्तु यह लघुत्वभाव संयोगको निमित्त मानकर होनेवाले गुरुका ही होता है दीर्घ आदि गुरुका नहीं। उदाहरण देते हैं यथा—॥ १० ॥

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि ॥
अल्पव्ययेन सुन्दरि ! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति ॥ ११ ॥

इस श्लोकमें 'ग्राम्य' शब्दके पूर्व 'सुन्दरि' की रि गुरु थी, किन्तु लघु ही मानी गयी है। परन्तु जहां सुन्दरी होगा उसे सुन्दरी नहीं कर सकते ॥ ११ ॥

अब्धिभूतरसादीनां ज्ञेयाः संज्ञास्तु लोकतः ॥
ज्ञेयः पादश्चतुर्थांऽशो यतिर्विच्छेदसंज्ञितः ॥ १२ ॥

जैसे लोकमें—ज्योतिष आदि शास्त्रोंमें—अब्धि आदिसे चार संख्या आदि का बोध होता है। वैसे ही इस छन्दःशास्त्रमें भी जानना चाहिये। अर्थात्—अब्धिके अर्थ समुद्र है और समुद्र चार हैं अतः अब्धि = चार। भूत = पांच। रस = छः। आदिपदसे अश्व, मुनिसे = सात। वसु, नाग = आठ। ग्रह = नव। दिशा = दश। रुद्र = ग्यारह। आदित्य, सूर्य = बारह। श्लोकके चौ भागको पाद कहते हैं। अर्थात्—प्रत्येक श्लोकमें चार पाद हुआ करते हैं। विच्छेद (विराम) को यति कहते हैं ॥ १२ ॥

युक्समं विषमं चायुक्स्थानं सद्भिर्निगद्यते ॥
सममर्धसमं वृत्तं विषमं च तथापरम् ॥ १३ ॥

छन्दःशास्त्रज्ञ विद्वानोंके मतानुसार द्वितीय, चतुर्थादि स्थानका नाम सम तथा एक, तृतीय आदि स्थानका नाम विषम है। इसी रीतिसे युग्म, अनोज शब्दसे सम तथा अयुग्म, ओज शब्दसे विषम स्थानको जानना चाहिये ॥ १३ ॥

अङ्घ्रयो यस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिताः ॥

तच्छन्दःशास्त्रतत्त्वज्ञाः समं वृत्तं प्रचक्षते ॥ १४ ॥

जिस श्लोकमें चारों चरण (पाद) तुल्य लक्षणवाले हों वह 'समवृत्त' कहा जाता है ॥ १४ ॥

प्रथमाङ्घ्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणो भवेत् ॥
द्वितीयस्तुर्यवद्वृत्तं तदर्धसममुच्यते ॥ १५ ॥

जिस श्लोकका प्रथम चरण तृतीय चरण के तुल्य हो तथा द्वितीय चरण चतुर्थ चरणके तुल्य हो उसे 'अर्धसम' कहते हैं ॥ १५ ॥

यस्य पादचतुष्केऽपि लक्ष्म भिन्नं परस्परम् ॥
तदाहुर्विषमं वृत्तं छन्दःशास्त्रविशारदाः ॥ १६ ॥

जो श्लोक चारो चरणोंमें तुल्य लक्षणवाला न हो भिन्न—भिन्न लक्षणवाला हो । उसे छन्दःशास्त्रविशारद लोग 'विषमवृत्त' कहते हैं ॥ १६ ॥

आरभ्यैकाक्षरात्पादादेकैकाक्षरवर्द्धितैः ॥
पृथक्छन्दो भवेत्पादैर्यावत्षड्विंशतिं गतम् ॥ १७ ॥

एक एक अक्षरसे आरम्भ करके एक एक अक्षरको बढ़ाकर २६ अक्षरोंतक एक चरणवाले भिन्न—भिन्न जातिवाले 'वर्णात्मक छन्द' होते हैं। [अर्थात्—एक अक्षरके पादवाले 'उक्ता' छन्दसे प्रारम्भ करके 'उत्कृति' नामवाले २६ अक्षरोंके एक पादवाले छन्द होते हैं।] ॥ १७ ॥

तदूर्ध्वं चण्डवृष्ट्यादिदण्डकाः परिकीर्तिताः ॥
शेषं गाथास्त्रिभिः षड्भिश्चरणैश्चोपलक्षिताः ॥ १८ ॥

इसके अतिरिक्त अर्थात् २६ अक्षरोंके चरणसे अधिकवाले छन्द 'चण्डवृष्टि' 'दण्डक' संज्ञावाले होते हैं। और इन लक्षणोंसे भी भिन्न तीन अथवा छः पादोंवाले छन्दोंका नाम 'गाथा' है। तथा विलक्षण-विलक्षण लघु-गुरुवाले वर्णोंको भी गाथा ही जानना चाहिये। अर्थात्—जिन छन्दोंमें ३ अथवा छः पादसे कम अथवा अधिक हों और गुरु लघुका क्रम भी भिन्न हो वे भी 'गाथा' में ही परिगणित हैं ॥ १८ ॥

उक्ताऽत्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ॥
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव च ॥ १९ ॥

त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ॥
शक्वरी साऽतिपूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी ततः स्मृते ॥ २० ॥

धृतिश्चाऽतिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिराकृतिः ॥
विकृतिः सङ्कृतिश्चैव तथाऽतिकृतिरुत्कृतिः ॥ २१ ॥

एक अक्षरसे आरम्भ कर छब्बीस अक्षरोंके पादवाले छन्दोंकी नामावली—
१–उक्ता। २–अत्युक्ता। ३–मध्या। ४–प्रतिष्ठा। ५–सुप्रतिष्ठा। ६–गायत्री। ७–उष्णिक्। ८–अनुष्टुप्। ९–बृहती। १०–पङ्क्तिः। ११–त्रिष्टुप्। १२–जगती। १३–अतिजगती। १४–शक्वरी। १५–अतिशक्वरी। १६–अष्टिः। १७–अत्यष्टिः। १८–धृतिः। १९–अतिधृतिः। २०–कृतिः। २१–प्रकृतिः। २२–आकृतिः। २३–विकृतिः। २४–संकृतिः। २५–अतिकृतिः। २६–उत्कृतिः १९–२१

इत्युक्ताश्छन्दसां संज्ञाः क्रमतो वच्मि साम्प्रतम् ॥
लक्षणं सर्ववृत्तानां मात्रावृत्ताऽनुपूर्वकम् ॥ २२ ॥

इति श्रीकेदारभट्टविरचिते वृत्तरत्नाकरे संज्ञाभिधानो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥

इस रीतिसे छन्दोंके नाम कह दिये। अर्थात्–'उक्ता' से लेकर 'उत्कृति' तक छन्दोंके नाम बता दिये। अब सर्वप्रथम मात्रा छन्दोंका निरूपण करके पुनः सम्पूर्ण छन्दोंके लक्षणोंको कहूंगा ॥ २२ ॥

इस प्रकारसे प्रथम अध्यायमें वृत्तरत्नाकरकी मणिमयी हिन्दी टीका समाप्त हुई।

द्वितीयोऽध्यायः

लक्ष्मैतत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे जः ॥
षष्ठोऽयं नलघू वा प्रथमेऽर्धे नियतमार्यायाः ॥ १ ॥

(आर्या) आर्या छन्दके पूर्वार्धमें गुरुके सहित सात गण होते हैं। तथा विषम स्थानमें तृतीय–पञ्चम प्रभृति स्थानमें जगण नहीं होता है। छठे स्थानमें जगण अथवा नगण और एक लघुका होना विकल्पसे जानना चाहिये। [इसके चतुर्मात्रिक गण होते हैं।] ॥ १ ॥

षष्ठे द्वितीयलात्परके न्ले मुखलाच्च सयतिपदनियमः ॥
चरमेऽर्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो लः ॥ २ ॥

अगर छठे स्थानमें चतुर्लघुरूप गण (नलघु) हो तो, उस गणके दूसरे लघुसे प्रथम (पूर्व) गणके अन्तमें विराम (यति) जानना चाहिये। यदि षष्ठ गणसे परे सातवां गण चतुर्लघु हो तो, उसके पहिले लघुके पूर्वमें अर्थात् छठे गणके अन्तमें यति जानना चाहिये। अब उत्तरार्धका लक्षण कहते हैं—

अगर पांचवां गण चतुर्लघुरूप होवे तो, उसके पूर्वमें अर्थात्-चौथे गणके अन्तमें विराम करना चाहिये। आर्यावृत्तके उत्तरार्धमें नियमसे छठा गण एक लघु (एकमात्ररूप) ही होता है। चातुर्मात्रिक नहीं होता है। यही प्रथमार्धसे द्वितीयार्धकी विशेषता जानना चाहिये ॥ २ ॥

त्रिष्वंशकेषु पादो दलयोराद्येषु दृश्यते यस्याः ॥
पथ्येति नाम तस्याः प्रकीर्तितं नागराजेन ॥ ३ ॥

(पथ्या) जिसके पूर्वार्ध और परार्धरूप भागोंके प्रथम तीन अंश—बारह मात्रा रूप तीन गणोंके अन्तमें चरणकी समाप्ति होवे उसे 'पथ्या' जानना चाहिये ऐसा नागराजका कथन है ॥ ३ ॥

उलङ्घ्य गणत्रयमादिमं शकलयोर्द्वयोर्भवति पादः ॥
यस्यास्तां पिङ्गलनागो विपुलामिति समाख्याति ॥ ४ ॥

(विपुला) जिस आर्या वृत्तके प्रथम और दूसरे दोनोंमें द्वादशमात्रात्मक तीन गणोंका उल्लंघन करके चौथे गणमें पादकी समाप्ति होवे उसे 'विपुला' वृत्त पिङ्गलनागने कहा है ॥ ४ ॥

उभयार्धयोर्जकारौ द्वितीयतुर्यौ गमध्यगौ यस्याः ॥
चपलेति नाम तस्याः प्रकीर्तितं नागराजेन ॥ ५ ॥

(चपला) जिस आर्यावृत्तके पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों अंशोंमें दूसरा तथा चौथा जगण दोनों ओरसे गुरु वर्णोंसे अच्छादित हो उसे 'चपला' जानना चाहिये। ऐसा नागराजने कहा है ॥ ५ ॥

आद्यं दलं समस्तं भजेत लक्ष्म चपलागतं यस्याः ॥
शेषे पूर्वजलक्ष्मा मुखचपला सोदिता मुनिना ॥ ६ ॥

(मुखचपला) जिस वृत्तका पूर्वार्ध चपलाके पूरे लक्षणोंसे युक्त होवे तथा जिसका उत्तरार्ध आर्याके सामान्य लक्षणोंसे युक्त होवे उसे पिंगलमुनिने 'मुख-चपला' कहा है ॥ ६ ॥

प्राक्प्रतिपादितमर्धे प्रथमे प्रथमेतरे च चपलायाः ॥
लक्ष्माश्रयेत सोक्ता विशुद्धधीभिर्जघनचपला ॥ ७ ॥

(जघनचपला) जिस वृत्तके प्रथमार्धमें आर्याके साधारण लक्षण होवें तथा जिसके उत्तरार्धमें चपलाके लक्षण घटते हों। उसे पिंगलमुनिने जघन-चपला कहा है ॥ ७ ॥

आर्याप्रथमोदलोक्तं यदि कथमपि लक्षणं भवेदुभयोः ॥
दलयोः कृतयतिशोभां तां गीतिं गीतवान्भुजङ्गेशः ॥ ८ ॥

(गीति) जिस वृत्तके पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों भाग आर्याके पूर्वार्धके सदृश हों तथा उनमें विरामकी शोभा भी हो उसे छन्दःशास्त्रज्ञने 'गीति' कहा है ॥ ८ ॥

आर्याद्वितीयकेऽर्धे यद् गदितं लक्षणं तत्स्यात् ॥
यद्युभयोरपि दलयोरुपगीतिं तां मुनिर्ब्रूते ॥ ९ ॥

(उपगीति) जिस वृत्तके पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों भाग आर्याके उत्तरार्धके समान हो उसे पिंगलाचार्यने 'उपगीति' कहा है ॥ ९ ॥

आर्याशकलद्वितयं व्यत्ययरचितं भवेद्यस्याः ॥
सोद्गीतिः किल गदिता तद्वद्यत्यंशभेदसंयुक्ता ॥ १० ॥

(उद्गीति) जिस वृत्तमें आर्यावृत्तके पूर्वार्ध और उत्तरार्ध विपरीत (व्यत्यय) रीतिसे हों तथा विराम आदि आर्यावृत्तके ही सदृश हों अर्थात्-आर्याका पूर्वार्ध परार्ध हो और परार्ध पूर्वार्ध हो वह 'उद्गीतिवृत्त' कहा जाता है ॥ १० ॥

आर्यापूर्वार्धं यदि गुरुणैकेनाधिकेन निधने युक्तम् ॥
इतरत्तद्वन्निखिलं भवति यदीयमर्द्धमुदितार्यागीतिः ॥११॥

(आर्यागीति) जिस वृत्तका पूर्वार्ध आर्यावृत्तके पूर्वार्धके समान हो तथा उसमें एक गुरु और अधिक हो एवं उत्तरार्ध भी इसी कथित पूर्वार्धके समान हो वह 'आर्यागीति' वृत्त कहा जाता है ॥ ११ ॥

षड् विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः ॥
न समात्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः ॥ १२ ॥

(वैतालीयवृत्त) जिस मात्रावृत्तमें प्रथम और तीसरे चरणमें अर्थात् विषम पादमें छः मात्राएं हों तथा दूसरे और चौथे चरणमें अर्थात् सम पादमें ८ मात्राएं हों एवं सम पादकी यानी दूसरे और चौथे चरणकी मात्राएं केवल गुरु अथवा केवल लघु न हों अपितु गुरु-लघुसे युक्त हों और सम मात्राएं आगेकी मात्रासे परस्पर मिली हुई भी न हों तथा आखिरीमें (अन्तमें) एक रगण, एक लघु और एक गुरु हो वह 'वैतालीय' वृत्त कहा जाता है ॥ १२ ॥

पर्यन्ते यौं तथैव शेषमौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम् ॥१३॥

(औपच्छन्दसिक) जिस वृत्तके अन्तमें भगण और रगण हो अर्थात

पूर्वोक्त वैतालीयवृत्तके चारो चरणोंमें एक—एक गुरुको और धर दिया जाय तो छन्दःशास्त्रके अनुसार उसकी 'औपच्छन्दसिक' संज्ञा है ॥ १३ ॥

आपातलिका कथितेयं भाद् गुरुकावथ पूर्ववदन्यत् ॥१४॥

(आपातलिका) जिस वृत्तके द्वितीय और चतुर्थ चरणों की आठ मात्राओंके अन्तमें तथा प्रथम और तृतीय चरणोंकी छः मात्राओंके अन्तमें एक भगण तथा दो गुरु रखे जायं तो वह आपातलिका वृत्त कहा जाता है ॥ १४ ॥

तृतीययुग्दक्षिणान्तिका समस्तपादेषु द्वितीयलः ॥ १५ ॥

(दक्षिणान्तिका) जिस वैतालीय वृत्तमें चारो चरणोंकी दूसरी मात्रा तीसरी मात्रासे संयुक्त हो वह 'दक्षिणान्तिका वृत्त' कहा जाता है ॥ १५ ॥

उदीच्यवृत्तिर्द्वितीयलः सक्तोऽग्रेण भवेद्युग्मयोः ॥ १६ ॥

(उदीच्यवृत्ति) जिस वैतालीय वृत्तके प्रथम तृतीय चरणोंमें दूसरी मात्रा तीसरी मात्राके साथ संयुक्त हो वह 'उदीच्यवृत्ति-वृत्त' कहा जाता है ॥ १६ ॥

पूर्वेण युतोऽथ पञ्चमः प्राच्यवृत्तिरुदितेति युग्मयोः ॥ १७ ॥

(प्राच्यवृत्ति) जिस वैतालीय वृत्तके सब पादमें अर्थात्—दूसरे और चौथे पादमें पांचवीं मात्रा चौथी मात्राके साथ मिली हुई हो वह 'प्राच्यवृत्ति-वृत्त' कहा जाता है ॥ १७ ॥

यदा समावोजयुग्मकौ पूर्वयोर्भवति तत्प्रवृत्तकम् ॥ १८ ॥

(प्रवृत्तकवृत्त) जिस वैतालीय वृत्तमें प्रथम और तृतीय पाद उदीच्यवृत्ति के प्रथम और तृतीय पादके सदृश हों तथा दूसरा और चौथा पाद प्राच्यवृत्तिके समान हो उसे 'प्रवृत्तकवृत्त' कहा जाता है ॥ १८ ॥

अस्य युग्मरचिताऽपरान्तिका ॥ १९ ॥

(अपरान्तिका) जिस वृत्तके प्रत्येक पादमें सोलह सोलह मात्राएं हों अर्थात् चारो पाद प्रवृत्तक वृत्तके दूसरे और चौथे पादके समान हों और पांचवीं मात्रा चौथी मात्रासे मिली हो तो वह 'अपरान्तिका' कहा जाता है ॥ १९ ॥

अयुग्भवा चारुहासिनी ॥ २० ॥

(चारुहासिनी) जिस वृत्तके चारो पादोंमें चौदह—चौदह मात्राएं हों अर्थात्—जिसके प्रत्येक पाद प्रवृत्तक प्रथम और तृतीयपादके समान हों तथा दूसरी मात्रा तीसरी मात्राके साथ मिली हुई हो वह 'चारुहासिनी' वृत्त कहा जाता है ॥ २० ॥

वक्त्रं नाद्यान्नसौ स्यातामब्धेर्योऽनुष्टुभि ख्यातम् ॥ २१ ॥

(वक्त्र अनुष्टुप्) जिस वृत्तके पहले अक्षरके पश्चात् नगण और सगण न हों तथा चौथे अक्षरके पश्चात् यगण जरूर रहे उसे अष्टाक्षर चरणवाला 'वक्त्र अनुष्टुप' कहते हैं। चतुर्थ अक्षरके पश्चात् रगणका रहना भी सम्प्रदायाई माना जाता है ॥ २१ ॥

युजोर्जेन सरिद्भर्तुः पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम् ॥ २२ ॥

(पथ्यावक्त्र) जिस वृत्तके द्वितीय और चतुर्थ चरणोंमें चौथे अक्षरके पश्चात् जगण हो वह 'पथ्यावक्त्र' कहा जाता है ॥ २२ ॥

ओजयोर्जेन वारिधेस्तदेव विपरीतादि ॥ २३ ॥

(विपरीत पथ्यावक्त्र) जिस वृत्तके प्रथम और तृतीय चरणोंमें चतुर्थ अक्षरसे परे जगण होवे वह 'विपरीत पथ्यावक्त्र' कहा जाता है ॥ २३ ॥

चपलावक्त्रमयुजोर्नकारश्चेत्पयोराशेः ॥ २४ ॥

(चपला वक्त्र) जिस वृत्तके प्रथम और तृतीय चरणोंमें चतुर्थ अक्षरके पश्चात् नगण हो वह 'चपलावक्त्र' कहा जाता है ॥ २४ ॥

यस्यां लः सप्तमो युग्मे सा युग्मविपुला मता ॥ २५ ॥

(युग्म विपुला) जिस वृत्तके सम पादमें—दूसरे और चौथे चरणोंमें—सातवां अक्षर लघु हो वह 'युग्म विपुला' कहा जाता है ॥ २५ ॥

सैतवस्याऽखिलेष्वपि ॥ २६ ॥

सैतवाचार्यके मतसे सभी चरणोंमें सप्तम अक्षर लघु होना चाहिये ॥ २६ ॥

भेनाऽब्धितो भाद्विपुला ॥ २७ ॥

(भविपुला) जिस वृत्तमें चौथे अक्षरके पश्चात् भगण हो वह 'भविपुला' कहा जाता है ॥ २७ ॥

इत्थमन्या रश्चतुर्थात् ॥ २८ ॥

(रविपुला) जिस वृत्तमें चौथे अक्षरसे परे रगण हो वह 'रविपुला' कहा जाता है ॥ २८ ॥

नोऽम्बुधेश्चेन्नविपुला ॥ २९ ॥

(नविपुला) जिस वृत्तमें चौथे अक्षरके पश्चात् नगण हो वह 'नविपुला' कहा जाता है ॥ २९ ॥

तोऽब्धेस्तत्पूर्वान्या भवेत् ॥ ३० ॥

(तविपुला) जिस वृत्तके चौथे अक्षरसे परे तगण हो वह 'तविपुला' कहा जाता है ॥ ३० ॥

द्विगुणितवसुलघुरचलधृतिरिति ॥ ३१ ॥

(अचलधृति) जिस वृत्तमें सोलह लघु—अर्थात् आठ लघु दोसे गुणित हों वह 'अचलधृति' कहा जाता है ॥ ३१ ॥

मात्रासमकं नवमो ल्गान्तम् ॥ ३२ ॥

(मात्रासमक) जिस वृत्तिकी नवमी मात्रा लघु तथा सोलहवीं मात्रा गुरु हो उसे 'मात्रासमक' कहा जाता है ॥ ३२ ॥

(विश्लोक) जिस वृत्तमें चार मात्राओंके अन्तमें जगण हो अथवा चार लघु

जो न्लावथाम्बुधेर्विश्लोकः ॥ ३३ ॥

हों उसे 'विश्लोक' कहा जाता है ॥ ३३ ॥

तद्युगलाद्वानवासिका स्यात् ॥ ३४ ॥

(वानवासिका) जिस वृत्तिकी आठ मात्राओंके अन्तमें जगण अथवा चार लघु हों वह 'वानवासिका' कहा जाता है ॥ ३४ ॥

बाणाष्टनवसु यदि लश्चित्रा ॥ ३५ ॥

(चित्रा) जिस वृत्तकी पांचवीं, आठवीं तथा नवमीं मात्रा लघु हो वह 'चित्रा' कहा जाता है ॥ ३५ ॥

उपचित्रा नवमे परयुक्ते ॥ ३६ ॥

(उपचित्रा) जिस वृत्तकी नवमीं मात्रा दशवीं मात्रासे युक्त हो वह 'उपचित्रा' कहा जाता है। जयदेवका मत इससे भिन्न है। यदि आठवीं मात्राके पश्चात् भगण और दो गुरु हों तो उपचित्रा कहा जाता है ॥ ३६ ॥

यदतीतकृतविविधलक्ष्मयुतैर्मात्रासमादिपादैः कलितम् ॥
अनियतवृत्तपरिमाणयुक्तं प्रथितं जगत्सु पादाकुलकम् ॥ ३७ ॥

(पादाकुलक) जिस वृत्त में प्रथम कथित कई रीतिके लक्षण वर्त्तमान हों अर्थात्—मात्रासमक आदि वृत्तोंके चरणोंसे रचित हो तथा उसमें किसी एक छन्दका लक्षण नियत न हो। परन्तु एक चरणमें किसी छन्दका, दूसरे चरणमें किसी दूसरे वृत्तका लक्षण घटित होवे किन्तु सोलह मात्राएं ठीक ठीक हों तो उस वृत्तिका नाम 'पादाकुलकवृत्त' कहा जाता है। अर्थात्—पहले चरणमें मात्रासमक विश्लोक-चित्राका लक्षण हो, दूसरे चरणमें विश्लोक—उपचित्रा

छन्दका लक्षण, तीसरे चरणमें मात्रासमक-वानवासिकाका लक्षण और चौथे चरणमें उपचित्रा तथा विश्लोकका लक्षण होवे वह पादाकुलक कहा जाता है ॥ ३७ ॥

वृत्तस्य ला विना वर्णैर्गा वर्णा गुरुभिस्तथा ॥
गुरवो लैर्दले नित्यं प्रमाणमिति निश्चितम् ॥ ३८ ॥

अधुना छन्दके लघु-गुरु तथा वर्णोंकी संख्या बोध विषयमें कहा जाता है—यदि वृत्तकी मात्रा और वर्णसंख्या ज्ञात होवे तथा गुरु-लघुकी संख्या अज्ञात होवे तो, मात्रासंख्यामेंसे वर्णसंख्या घटानेसे शेष बची गुरु संख्या जानना चाहिये। वर्णसंख्यामेंसे गुरुसंख्या घटानेसे लघु संख्या ज्ञात होती है। यदि मात्रा और गुरुकी संख्या ज्ञात है और वर्णसंख्या अज्ञात है तो मात्रासंख्यामेंसे गुरु संख्या घटानेसे वर्णसंख्या शेष बचती है। अब गुरुसंख्याके जाननेकी दूसरी रीति कहते हैं—वृत्तकी मात्रासंख्यामेंसे लघुसंख्या घटाकर जो अवशिष्ट रहे उसे दो भागोंमें कर दे। एक भाग की जो संख्या होगी वही गुरुकी संख्या जाननी चाहिये। वृत्तका तो केवल उपलक्षण मात्र है यही प्रकार गद्य आदिमें भी गुरु लघु जाननेका है। यथा—'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' अथवा 'वृत्तस्य ला विना वर्णैः' इन चरणोंकी मात्रा संख्या चौदह है और वर्ण संख्या आठ है अतः १४ मेंसे ८ घटा दिये तो शेष ६ बचे। अत एव गुरु संख्या ६ है। अब मात्रा संख्या १४ मेंसे गुरु संख्या ६ घटा दी गयी तो शेष ८ बचे तो वर्ण संख्या (अक्षर संख्या) निकल आयी कि इस चरणमें कितने वर्ण हैं। गुरुसंख्याको वर्ण संख्यामें से घटा दिया तो लघु संख्या २ निकली अतः दो लघु हैं—दूसरी प्रणाली यह भी है कि, मात्रा संख्या १४ में से लघु संख्या दो घटा दी तब १२ शेष रहे उनकी आधी संख्या ६ हुई क्योंकि ६ × २ = १२ होते हैं। अतः ६ गुरु हैं ॥ ३८ ॥

शिखिगुणितदशलघुरचित-
मपगतलघुयुगलमपरमिदमखिलम् ॥
सगुरु शकलयुगलकमपि
सुपरिघटितललितपदविततति भवति शिखा ॥ ३९ ॥

(शिखा) जिस वृत्तके पूर्वार्धमें अठ्ठाईस लघु तथा अन्तमें एक गुरु होवे तथा उत्तरार्धमें तीस लघु और एक गुरु होवे वह शिखा कहा जाता है। अर्थात्

तीनों अग्नि (गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि और आहवनीय) से गुणित दश लघु ३ × १० = ३०—२—२८ + १ = २९ वाला पूर्वार्ध तथा ३१ वाला उत्तरार्ध होवे ॥ ३९ ॥

विनिमयविनिहितशकलयुगल-
कलितपदविततिविरचितगुणनिचया ॥
श्रुतिसुखकृदियमपि जगति च्चि
जशिर उपगतवति सति भवति खजा ॥ ४० ॥

(खजा) जिस वृत्तमें शिखाके पूर्वार्ध और परार्धका विनिमय—आदान-प्रदान कर दिया जाता है यानी शिखाका पूर्वार्ध परार्ध हो तथा परार्ध पूर्वार्ध हो तो उसे कर्णोंको मनोहर लगनेवाले ललित पदोंसे विभूषित 'खजा' कहते हैं ॥ ४० ॥

अष्टावर्धे गा द्व्यभ्यस्ता यस्याः साऽनङ्गक्रीडोक्ता ।
दलमपरमपि वसुगुणितसलिलनिधिलघु कविरचितं
पदविततति भवति ॥ ४१ ॥

(अनंगक्रीडा) जिस वृत्तमें पूर्वार्धमें आठ गुरु दोसे गुणित किये हों। अर्थात् ८ × २ = १६ गुरु हों। उत्तरार्धमें आठ लघु चारसे गुणित होवें अर्थात ८ × ४ = ३२ लघु हों। ऐसे सुन्दर पदवाले छन्दको विद्वान् 'अनंगक्रीडा' कहा करते हैं। पिंगलकार इसे 'सौम्या' कहते हैं ॥ ४१ ॥

त्रिगुणनवलघुरवसितिगुरुरिति दलयुगकृततनुरतिरुचिरा ॥ ४२ ॥

इति श्रीकेदारभट्टविरचिते वृत्तरत्नाकरे द्वितीयोऽध्यायः ।

जिस वृत्तमें पूर्वार्धमें नव लघु तीनसे गुणित किये होवें तथा अन्तमें एक गुरु होवे और ऐसा ही उसका उत्तरार्ध भी होवे वह 'रुचिरा' वृत्त कहा जाता है। ९ × ३ = २७ लघु और १ गुरु ॥ ४२ ॥

इस प्रकारसे द्वितीय अध्यायमें वृत्तरत्नाकरकी मणिमयी हिन्दी टीका समाप्त हुई ।

तृतीयोऽध्यायः

गुः श्रीः ॥ १ ॥

(श्रीः) एक-एक गुरु अक्षरवाले चारो पाद हों तो, वह 'श्रीः' वृत्त कहा जाता है। (वृत्तोंमें सदा चार पाद होते हैं) ॥ १ ॥

गौ स्त्री ॥ २ ॥

(स्त्री) दो-दो गुरु अक्षरवाले चारो पाद हों तो, वह 'स्त्री' वृत्त कहा जाता है ॥

मो नारी ॥ ३ ॥

(नारी) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे मगण—तीन गुरु—हों तो, वह 'नारी' वृत्त कहा जाता है ॥ ३ ॥

रो मृगी ॥ ४ ॥

(मृगी) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे रगण—मध्यमें लघु—हो तो, वह 'मृगी' वृत्त कहा जाता है ॥ ४ ॥

म्गौ चेत्कन्या ॥ ५ ॥

(कन्या) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण और एक गुरु हो तो, वह 'कन्या' वृत्त कहा जाता है ॥ ५ ॥

भ्गौ गिति पङ्क्तिः ॥ ६ ॥

(पंक्ति) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक भगण और दो गुरु हो तो, वह 'पंक्ति' वृत्त कहा जाता है ॥ ६ ॥

त्यौ स्तस्तनुमध्या ॥ ७ ॥

(तनुमध्या) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक तगण और एक यगण हो तो, वह 'तनुमध्या' वृत्त कहा जाता है ॥ ७ ॥

शशिवदना न्यौ ॥ ८ ॥

(शशिवदना) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण और एक यगण हो तो, वह 'शशिवदना' वृत्त कहा जाता है ॥ ८ ॥

विद्युल्लेखा मो मः ॥ ९ ॥

(विद्युल्लेखा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो मगण हों तो, वह 'विद्युल्लेखा' वृत्त कहा जाता है ॥ ९ ॥

त्सौ चेद्वसुमती ॥ १० ॥

(वसुमती) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक तगण और एक सगण हो तो, वह 'वसुमती' वृत्त कहा जाता है ॥ १० ॥

म्सौ गः स्यान्मदलेखा* ॥ ११ ॥

(मदलेखा) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण और एक सगण तथा एक गुरु हो तो, वह 'मदलेखा' वृत्त कहा जाता है ॥ ११ ॥

भौ गिति चित्रपदा गः ॥ १२ ॥

(चित्रपदा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो भगण तथा दो गुरु हों तो, वह 'चित्रपदा' वृत्त कहा जाता है ॥ १२ ॥

मो मो गो गो विद्युन्माला ॥ १३ ॥

(विद्युन्माला) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो मगण और दो गुरु हों तो वह 'विद्युन्माला' वृत्त कहा जाता है ॥ १३ ॥

माणवकं भात्तलगाः ॥ १४ ॥

(माणवक) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक भगण और एक तगण तथा एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'माणवक' वृत्त कहा जाता है ॥ १४ ॥

म्नौ गौ हंसरुतमेतत् ॥ १५ ॥

(हंसरुत) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण और एक नगण तथा दो गुरु हों तो, वह 'हंसरूत' वृत्त कहा जाता है ॥ १५ ॥

र्जौ समानिका गलौ च ॥ १६ ॥

(समानिका) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक रगण और एक जगण तथा एक गुरु एवं एक लघु हो तो, वह 'समानिका' वृत्त कहा जाता है ॥ १६ ॥

---

*तथा—

सरगैर्हंसमाला ॥ १ ॥ प्रत्येक पादमें क्रमसे सगण तथा रगण और गुरु हो तो, 'हंसमाला' वृत्त कहा जाता है ॥ १ ॥

मधुमति ननगाः ॥ २ ॥ प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो नगण और एक गुरु हो तो, 'मधुमती' वृत्त कहा जाता है ॥ २ ॥

कुमारललिता ज्सौ ग् ॥३॥ प्रत्येक पाद में यदि क्रमसे जगण और सगण तथा एक गुरु हों तो 'कुमारललिता' वृत्त कहा जाता है ॥ ३ ॥

चूडामणिस्तभगात् ॥४॥ प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक तगण और एक भगण तथा एक गुरु हो तो, 'चूड़ामणि' वृत्त कहा जाता है ॥ ४ ॥

नोटः—उपर्युक्त चारो सूत्र ७० पृष्ठ की नारायणी टीका में देखिये ।

प्रमाणिका जरौ लगौ ॥ १७ ॥

(प्रमाणिका) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक जगण और एक रगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, वह 'प्रमाणिका' वृत्त कहा जाता है ॥ १७ ॥

वितानमाभ्यां यदन्यत् ॥ १८ ॥

(वितान) समानिका और प्रमाणिकासे अन्य लक्षणवाले अनुष्टुप वृत्तोंको वितान छन्द कहते हैं । कुछ लोगोंके मत इससे भिन्न भी हैं ॥ १८ ॥

रान्नसाविह हलमुखी ॥ १९ ॥

(हलमुखी) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक रगण और एक नगण तथा एक सगण हो तो, वह 'हलमुखी' वृत्त कहा जाता है । (तीन और छः पर यति जानना चाहिये) ॥ १९ ॥

भुजगशिशुभृता नौ मः ॥ २० ॥

(भुजगशिशुभृता) प्रत्येक चरणमें क्रमसे दो नगण और एक मगण हो तो, वह 'भुजगशिशुभृता' छन्द कहा जाता है । सात और दो पर यति होती है ॥ २० ॥

म्सौ ज्गौ शुद्धविराडिदं मतम् ॥ २१ ॥

(शुद्धविराट्) प्रत्येक पादमें क्रमसे मगण और सगण तथा रगण और एक गुरु हो तो, छन्दःशास्त्री उसे 'शुद्धविराट्' छन्द कहते हैं । (पादान्तमें यति होती है) ॥ २१ ॥

म्नौ ज्गौ चेति पणवनामकम् ॥ २२ ॥

(पणवनामक) प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक मगण और एक नगण तथा एक जगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'पणवनामक' वृत्त कहा जाता है । (पांच–पांचपर यति होती है ॥ २२ ॥

ज्रौ रगौ मयूरसारिणी स्यात् ॥ २३ ॥

(मयूरसारिणी) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक रगण और एक जगण तथा एक रगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'मयूरसारिणी' वृत्त कहा जाता है । (पादान्तमें यति होती है) ॥ २३ ॥

भ्मौ सगयुक्तौ रुक्मवतीयम् ॥ २४ ॥

(रुक्मवती) प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक भगण और एक मगण तथा एक सगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'रुक्मवती' वृत्त कहा जाता है । (पादान्तमें यति जानिये) ॥ २४ ॥

मत्ता ज्ञेया मभसगयुक्ता ॥ २५ ॥

(मत्ता) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक मगण और एक भगण तथा एक सगण एवं गुरु हो तो, उसे 'मत्ता' छन्द जानना चाहिये। (चार और छः पर यति होती है) ॥ २५ ॥

नरजगैर्भवेन्मनोरमा ॥ २६ ॥

(मनोरमा) प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक नगण और एक रगण तथा एक जगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'मनोरमा' वृत्त कहा जाता है। (पादान्तमें यति होती है) ॥ २६ ॥

त्जौ जो गुरुणेयमुपस्थिता ॥ २७ ॥

(उपस्थिता) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक तगण और दो जगण तथा एक गुरु हो तो, वह 'उपस्थिता' छन्द कहा जाता है। (पादान्तमें यति अथवा किसीके मतसे दूसरे और आठवें पर यति होती है) ॥ २७ ॥

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ॥ २८ ॥

(इन्द्रवज्रा) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो तगण तथा दो गुरु हों तो वह 'इन्द्रवज्रा' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ २८ ॥

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ॥ २९ ॥

(उपेन्द्रवज्रा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे जगण और तगण तथा जगण एवं दो गुरु हों तो, वह 'उपेन्द्रवज्रा' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ २९ ॥

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ । पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ॥ ३० ॥

(उपजाति) एक चरण इन्द्रवज्रा दूसरा उपेन्द्रवज्रा किम्वा एक उपेन्द्रवज्रा दूसरा इन्द्रवज्रावाला यदि छन्द हो तो, वह 'उपजाति' वृत्त कहा जाता है। (कुल उपजाति १४ प्रकारके होते हैं। जिनके नाम नारायणी टीकामें स्पष्ट किये गये हैं ॥ ३० ॥)

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु । स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥ ३१ ॥

इसी रीतिसे जगती आदि वृत्तके इन्द्रवंश तथा उपेन्द्रवंश आदि छन्दोंको संयोग करनेसे दूसरे तरहके उपजाति वृत्त जानना चाहिये। जैसा इन्द्रवंश और उपेन्द्रवंशके संयोगका उदाहरण नारायणी टीकामें निर्देशित है ॥ ३१ ॥

नजजलगैर्गदिता सुमुखी ॥ ३२ ॥

(सुमुखी) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक नगण तथा दो जगण एक लघु एवं एक गुरु

हो तो, वह 'सुमुखी' वृत्त कहा जाता है। (पांच और छः पर यति जानना चाहिये)॥ ३२ ॥

दोधकवृत्तमिदं भभभाद् गौ ॥ ३३ ॥

(दोधकवृत्त) प्रत्येक चरणमें क्रमसे तीन भगण तथा दो गुरु हों तो, वह 'दोधकवृत्त' कहा जाता है। (पादान्तमें यति होती है)॥ ३३ ॥

शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः ॥ ३४ ॥

(शालिनी) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक मगण और दो तगण तथा दो गुरु हों तो, वह 'शालिनी' वृत्त कहा जाता है। (चार और सातपर यति होती है)॥ ३४ ॥

वातोर्मीयं कथिता म्भौ तगौ गः ॥ ३५ ॥

(वातोर्मी) प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक मगण और एक भगण तथा एक तगण एवं दो गुरु हों तो, वह 'वातोर्मी' वृत्त कहा जाता है। (शालिनीवत् यति होती है)॥ ३५ ॥

बाणरसैः स्याद्भतनगगैः श्रीः ॥ ३६ ॥

(श्रीः) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक भगण और एक तगण तथा एक नगण एवं दो गुरु हों तो, वह 'श्रीः' वृत्त कहा जाता है। (पांच और छः पर यति होती है)॥ ३६ ॥

म्भौ न्लौ गः स्याद् भ्रमरविलसितम् ॥ ३७ ॥

(भ्रमरविलसिता) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण और एक भगण तथा एक नगण एवं एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'भ्रमरविलसिता' वृत्त कहा जाता है। (चार और सातपर यति होती है)॥ ३७ ॥

रान्नराविह रथोद्धता लगौ ॥ ३८ ॥

(रथोद्धता) प्रत्येक पादमें क्रमसे एक रगण और एक नगण तथा फिर एक रगण एवं एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'रथोद्धता' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है)॥ ३८ ॥

स्वागतेति रनभाद् गुरुयुग्मम् ॥ ३९ ॥

(स्वागता) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक रगण और एक नगण तथा एक भगण एवं दो गुरु हों तो, वह 'स्वागता' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है)॥ ३९ ॥

ननसगगुरुरचिता वृन्ता ॥ ४० ॥

(वृन्ता) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो नगण तथा एक सगण एवं दो गुरु हों तो, वह 'वृन्ता' वृत्त कहा जाता है। (चार और सातपर यति होती है) ॥ ४० ॥

ननरलगुरुभिश्च भद्रिका ॥ ४१ ॥

(भद्रिका) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो नगण और एक रगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, वह 'भद्रिका' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ४१ ॥

श्येनिका रजौ रलौ गुरुर्यदा ॥ ४२ ॥

(श्येनिका) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक रगण और एक जगण फिर एक रगण तथा एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'श्येनिका' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ४२ ॥

मौक्तिकमाला यदि भतनाद् गौ ॥ ४३ ॥

(मौक्तिकमाला) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक भगण और एक तगण तथा एक नगण एवं दो गुरु हों तो, वह 'मौक्तिकमाला' वृत्त कहा जाता है। (पांच और छः पर यति होती है) ॥ ४३ ॥

उपस्थितमिदं ज्सौ ताद् गकारौ ॥ ४४ ॥

(उपस्थित) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक जगण और एक सगण तथा एक तगण और दो गुरु हों तो, वह 'उपस्थित' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ४४ ॥

चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रनभसैः ॥ ४५ ॥

(चन्द्रवर्त्म) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक रगण तथा एक नगण और एक भगण एवं एक सगण हो तो, वह 'चन्द्रवर्त्म' वृत्त कहा जाता है। (चार और आठपर यति होती है) ॥ ४५ ॥

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ॥ ४६ ॥

(वंशस्थ) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक जगण और एक तगण तथा फिर एक जगण एवं एक रगण हो तो, वह 'वंशस्थ' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ४६ ॥

स्यादिन्द्रवंशा ततजै रसंयुतैः ॥ ४७ ॥

(इन्द्रवंशा) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो तगण तथा एक जगण और एक रगण हो तो, वह 'इन्द्रवंशा' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥४७॥

इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम् ॥ ४८ ॥

(तोटक) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे चार सगण हों तो, वह 'तोटक' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ४८ ॥

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ॥ ४६ ॥

(द्रुतविलम्बित) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक नगण और दो भगण तथा एक रगण हो तो, वह 'द्रुतवलम्बित' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ४९ ॥

मुनिशरविरतिर्नौ म्यौ पुटोऽयम् ॥ ५० ॥

(पुट) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो नगण तथा एक मगण और एक यगण हो तो, वह 'पुट' वृत्त कहा जाता है। (सात और पांचपर यति होती है) ॥५०॥

प्रमुदितवदना भवेन्नौ च रौ ॥ ५१ ॥

(प्रमुदितवदना) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो नगण और दो रगण हों तो, वह 'प्रमुदितवदना' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५१ ॥

नयसहितौ न्यौ कुसुमविचित्रा ॥ ५२ ॥

(कुसुमविचित्रा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण फिर एक यगण फिर एक नगण और फिर एक यगण हो तो वह 'कुसुमविचित्रा' छन्द कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५२ ॥

रसैर्जसजसा जलोद्धतगतिः ॥ ५३ ॥

(जलोद्धतगति) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक जगण फिर एक सगण पुनः एक जगण तथा पुनः एक सगण हो तो, वह 'जलोद्धतगति' वृत्त कहा जाता है। (छःपर यति होती है) ॥ ५३ ॥

चतुर्जगणं वद मौक्तिकदाम ॥ ५४ ॥

(मौक्तिकदाम) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे चार जगण हों तो, वह 'मौक्तिकदाम' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५४ ॥

भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः ॥ ५५ ॥

(भुजंगप्रयात) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे चार यगण हों तो, वह

'भुजंगप्रयात' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५५ ॥

रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी सम्मता ॥ ५६ ॥

(स्रग्विणी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे चार रगण हों तो, वह 'स्रग्विणी' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५६ ॥

भुवि भवेन्नभजरैः प्रियम्वदा ॥ ५७ ॥

(प्रियंवदा) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक नगण और एक भगण तथा एक जगण एवं एक रगण हो तो, वह 'प्रियंवदा' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५७ ॥

त्यौ त्यौ मणिमाला च्छिन्ना गुहवक्त्रैः ॥ ५८ ॥

(मणिमाला) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक तगण और एक यगण पुनः एक तगण और एक यगण हो तो, वह 'मणिमाला' वृत्त कहा जाता है। (छःपर यति होती है) ॥ ५८ ॥

धीरैरभाणि ललिता तभौ जरौ ॥ ५९ ॥

(ललिता) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक तगण और एक भगण तथा एक जगण एवं एक रगण हो तो, वह 'ललिता' वृत्त कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ५९ ॥

प्रमिताक्षरा सजससैरुदिता ॥ ६० ॥

(प्रमिताक्षरा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक सगण तथा एक जगण पुनः दो सगण हों तो, वह 'प्रमिताक्षरा' छन्द कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ६० ॥

ननभरसहिता महितोज्ज्वला ॥ ६१ ॥

(उज्ज्वला) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो नगण तथा एक भगण और एक रगण हो तो, वह 'उज्ज्वला' छन्द कहा जाता है। (पादमें यति होती है) ॥ ६१ ॥

पञ्चाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ ॥ ६२ ॥

(वैश्वदेवी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो मगण तथा दो यगण हों तो, वह 'वैश्वदेवी' वृत्त कहा जाता है। (पांच और सातपर यति होती है) ॥ ६२ ॥

अब्ध्यष्टाभिर्जलधरमाला म्भौ स्मौ ॥ ६३ ॥

(जलधरमाला) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण और एक भगण

तथा एक सगण एवं एक मगण हो तो, वह 'जलधरमाला' वृत्त कहा जाता है। (चार और आठपर यति होती है) ॥ ६३ ॥

इह नवमालिका नजभयैः स्यात् ॥ ६४ ॥

(नवमालिका) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण और एक जगण तथा एक भगण एवं एक यगण हो तो, वह 'नवमालिका' वृत्त कहा जाता है। (आठ चारपर यति होती है) ॥ ६४ ॥

स्वरशरविरतिर्ननौ रौ प्रभा ॥ ६५ ॥

(प्रभा) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो नगण तथा दो रगण हों तो, वह 'प्रभा' छन्द कहा जाता है। (सात और पांचपर विराम होता है) ॥ ६५ ॥

भवति नजावथ मालती जरौ ॥ ६६ ॥

(मालती) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण तथा दो जगण और एक रगण हो तो, वह 'मालती' वृत्त कहा जाता है। (पांच सातपर विराम होता है) ॥

जभौ जरौ वदति पञ्चचामरम् ॥ ६७ ॥

(पञ्चचामर) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक जगण तथा एक भगण और फिर एक जगण एवं एक रगण हो तो, उसे 'पञ्चचामर' छन्द कहते हैं। (चार आठपर यति होती है) ॥ ६७ ॥

अभिनवतामरसं नजजाद्यः ॥ ६८ ॥

(तामरस) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक नगण तथा दो जगण और एक यगण हो तो, उसे 'तामरस' वृत्त कहा जाना चाहिये। (पादमें यति होती है) ॥६८॥

तुरगरसयतिर्नौ ततौ गः क्षमा ॥ ६९ ॥

(क्षमा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो नगण तथा दो तगण और एक गुरु हो तो, वह 'क्षमा' छन्द कहा जाता है। (सात और छःपर यति होती है) ॥

म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम् ॥ ७० ॥

(प्रहर्षिणी) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण तथा एक नगण और एक जगण एवं एक रगण और एक गुरु हो तो, वह 'प्रहर्षिणी' वृत्त कहा जाता है। (तीन और दशपर यति होती है) ॥ ७० ॥

चतुर्ग्रहैरतिरुचिरा जभस्जगाः ॥ ७१ ॥

(अतिरुचिरा) जिसमें जगण, भगण, सगण, जगण औ गुरु हो वह अतिरुचिरा जानना चाहिये। (चार और नवपर विराम होता है) ॥ ७१ ॥

वेदै रन्ध्रैर्म्तौ यसगा मत्तमयूरम् ॥ ७२ ॥

(मत्तमयूर) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक मगण तथा एक तगण और एक यगण एवं एक सगण और एक गुरु हो तो, वह 'मत्तमयूर' छन्द कहा जाता है। (चार और नवपर यति होती है) ॥ ७२ ॥

(उपस्थितमिदं ज्सौ त्सौ सगुरुकं चेत्) ॥ ७३ ॥

(उपस्थित) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक जगण और एक सगण तथा एक तगण फिर एक सगण और एक गुरु हो तो, वह 'उपस्थित' छन्द कहा जाता है। (छः सातपर यति होती है) ॥ ७३ ॥

सजसा जगौ भवति मञ्जुभाषिणी ॥ ७४ ॥

(मञ्जुभाषिणी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक सगण पुनः जगण पुनः सगण और पुनः जगण तथा एक गुरु हो तो, वह 'मञ्जुभाषिणी' वृत्त कहा जाता है। (पाँच और आठपर यति होती है) ॥ ७४ ॥

ननततगुरुभिश्चन्द्रिकाश्वर्तुभिः ॥ ७५ ॥

(चन्द्रिका) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो नगण तथा दो तगण और एक गुरु हो तो, वह 'चन्द्रिका' वृत्त कहा जाता है। (सात और छःपर यति होती है) ॥ ७५ ॥

म्तौ न्सौ गावक्षग्रहविरतिरसम्बाधा ॥ ७६ ॥

(असम्बाधा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक मगण और एक तगण तथा एक नगण एवं एक सगण और दो गुरु हों तो, वह 'असम्बाधा' वृत्त कहा जाता है। (पांच और नवपर विराम होता है) ॥ ७६ ॥

ननरसलघुगैः स्वरैरपराजिता ॥ ७७ ॥

(अपराजिता) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे दो नगण, एक रगण और एक सगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, वह 'अपराजिता' वृत्त कहा जाता है। (सात-सातपर यति होती है) ॥ ७७ ॥

ननभनलघुगैः प्रहरणकलिता ॥ ७८ ॥

(प्रहरणकलिता) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो नगण एक भगण और एक नगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, वह 'प्रहरणकलिता' वृत्त कहा जाता है। (सात-सातपर यति होती है) ॥ ७८ ॥

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ॥ ७९ ॥

सिंहोन्नतेयमुदिता मुनिकाश्यपेन ॥ ८० ॥
उद्धर्षिणीयमुदिता मुनिसैतवेन ॥ ८१ ॥

(वसन्ततिलका) प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक तगण और एक भगण तथा दो जगण एवं दो गुरु हो तो, वह 'वसन्ततिलका' वृत्त कहा जाता है। इसे ही काश्यप मुनिने 'सिंहोन्नता' के नामसे पुकारा है तथा सैतव मुनिने 'उद्धर्षिणी' नामसे कहा है ॥ ७९ + ८० + ८१ ॥

इन्दुवदना भजसनैः सगुरुयुग्मैः ॥ ८२ ॥

(इन्दुवदना) प्रत्येक पादमें क्रमके एक भगण और एक जगण तथा एक सगण एवं एक नगण और दो गुरु हों तो, वह 'इन्दुवदना' वृत्त कहा जाता है ॥

द्विःसप्तच्छिदलोला म्सौ म्भौ गौ चरणे चेत् ॥ ८३ ॥

(अलोला) प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक मगण तथा एक सगण पुनः एक मगण और एक भगण तथा दो गुरु हों तो, वह 'अलोला' वृत्त कहा जाता है। (सात-सातपर यति होती है) ॥ ८३ ॥

द्विहतहयलघुरथ गिति शशिकला ॥ ८४ ॥

(शशिकला) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे चौदह लघु तथा एक गुरु हो तो, वह 'शशिकला' वृत्त कहा जाता है। (सात और आठपर विराम होता है) ॥८४॥

स्रगिति भवति रसनवकयतिरियम् ॥ ८५ ॥

(स्रक्) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे चौदह लघु तथा एक गुरु हो तो, वह 'स्रक्' वृत्त कहा जाता है। (छः और नवपर यति होती है) ॥ ८५ ॥

वसुहययतिरिह मणिगुणनिकरः ॥ ८६ ॥

(मणिगुणनिकर) प्रत्येक चरणमें यदि क्रममें चौदह लघु और एक गुरु हो तो, वह 'मणिगुणनिकर' वृत्त कहा जाता है। (आठ और सातपर विराम होता है) ॥ ८६ ॥

ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ॥ ८७ ॥

(मालिनी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे दो नगण और एक मगण तथा दो यगण हो तो, वह 'मालिनी' वृत्त कहा जाता है (आठ और सातपर यति होती है) ॥ ८७ ॥

भवति नजौ भजौ रसहितौ प्रभद्रकम् ॥ ८८ ॥

(प्रभद्रक) प्रत्येक चरण में यदि क्रमसे एक नगण और एक जगण तथा

एक भगण एवं एक जगण और एक सगण हो तो, वह 'प्रभद्रक' वृत्त कहा जाता है। (सात और आठपर यति होती है) ॥ ८८ ॥

सजना नयौ शरदशायतिरियमेला ॥ ८९ ॥

(एला) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक सगण और जगण तथा दो नगण एवं एक यगण हो तो, वह 'एला' वृत्त कहा जाता है। (पांच और दशपर यति होती है) ॥ ८९ ॥

म्रौ म्यौ यान्तौ भवेतां सप्ताष्टभिश्चन्द्रलेखा ॥ ९० ॥

(चन्द्रलेखा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक मगण और एक रगण तथा एक मगण एवं दो यगण हो तो, वह 'चन्द्रलेखा' छन्द कहा जाता है। (सात और आठपर यति होती है) ॥ ९० ॥

भ्रत्रिनगैः स्वरात्स्वमृषभगजविलसितम् ॥ ९१ ॥

(ऋषभगजविलसित) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक भगण और एक रगण तथा तीन नगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'ऋषभगजविलसित' छन्द कहा जाता है। (सात और नवपर यति होती है) ॥ ९१ ॥

नजभजरैः सदा भवति वाणिनी गयुक्तैः❀ ॥ ९२ ॥

❀ तथा—

चित्रसंज्ञमीरितं रजौ रजौ रगौ च वृत्तम् ॥ १ ॥

प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे रगण, जगण, रगण, जगण, रगण और एक गुरु हो तो, उसे 'चित्र' वृत्त कहते हैं ॥ १ ॥

जरौ जरौ ततो जगौ च पञ्चचामरं वदेत् ॥ २ ॥

प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु हो तो, उसे 'पञ्चचामर' छन्द कहते हैं ॥ २ ॥

सङ्कथिता भरौ सजसाश्च धीरललिता ॥ ३ ॥

प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे भगण, रगण, सगण, जगण, सगण हो तो, उसे 'धीरललिता' छन्द कहते हैं ॥ ३ ॥

पञ्चभकारयुताश्वगतिर्यदि चान्त्यगुरुः ॥ ४ ॥

प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे पांच भगण और एक गुरु हो तो, उसे 'अश्वगति' छन्द कहते हैं ॥ ४ ॥

नोटः—उपर्युक्त चारों सूत्र १०८ पृष्ठकी नारायणी टीकामें देखिये।

(वाणिनी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण और एक जगण तथा एक भगण, एवं जगण और एक रगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'वाणिनी' छन्द कहा जाता है । (सात और नवपर यति होती है) ॥ ९२ ॥

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ॥ ९३ ॥

(शिखरिणी) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक यगण और एक मगण तथा एक नगण एवं एक सगण और एक भगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, वह 'शिखरिणी' छन्द कहा जाता है । (छः और ग्यारहपर यति होती है) ॥ ९३ ॥

जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ॥ ९४ ॥

(पृथ्वी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक जगण और एक सगण तथा एक जगण एवं एक सगण और एक यगण तथा एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'पृथ्वी' वृत्त कहा जाता है । (आठ और नवपर यति होती है) ॥ ९४ ॥

दिङ्मुनि वंशपत्रपतितं भरनभनलगैः ॥ ९५ ॥

(वंशपत्रपतित) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक भगण और एक रगण तथा एक नगण एवं एक भगण और एक नगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, 'वंशपत्रपतित' वृत्त कहा जाता है (दश और सातपर विराम होता है) ॥९५॥

रसयुगहयैन्सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा ॥ ९६ ॥

(हरिणी) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'हरिणी' छन्द कहा जाता है । (छः, चार और सातपर यति होती है) ॥ ९६ ॥

मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत् ॥ ९७ ॥

(मन्दाक्रान्ता) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण, भगण, नगण और दो तगण तथा दो गुरु हों तो, वह 'मन्दाक्रान्ता' छन्द कहा जाता है । (चार, छः और सातपर यति होती है) ॥ ९७ ॥

हयदशभिर्नजौ भजजला गुरु नर्कुटकम् ॥ ९८ ॥

(नर्कुटक) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक नगण, जगण, भगण और दो जगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो, वह 'नर्कुटक' वृत्त कहा जाता है । (सात और दशपर यति होती है) ॥ ९८ ॥

मुनिगुहकार्णवैः कृतयति वद कोकिलकम् ॥ ९९ ॥

(कोकिलक) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक नगण, जगण, भगण और दो जगण तथा एक लघु एवं गुरु हो तो, वह 'कोकिलक' छन्द कहा जाता है। (सात और छः तथा चारपर यति होती है। केवल यतिमात्रका भेद है) ॥९९॥

स्याद् भूतर्त्वश्वैः कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ नयौ यौ ॥ १०० ॥

(कुसुमितलतावेल्लिता) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक मगण, तगण, नगण और तीन यगण हो तो, वह 'कुसुमितलतावेल्लिता' छन्द कहा जाता है। (पांच, छः और सातपर यति होती है) ॥ १०० ॥

सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ॥ १०१ ॥

(शार्दूलविक्रीडित) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण, सगण, जगण, सगण और दो तगण एवं एक गुरु हो तो, वह 'शार्दूलविक्रीडित,' छन्द कहा जाता है (बारह और सातपर यति होती है) ॥ १०१ ॥

ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्लौ गः सुवदना ॥ १०२ ॥

(सुवदना) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, भगण और एक लघु तथा एक गुरु हो तो, वह 'सुवदना' वृत्त कहा जाता है। (सात, सात और छःपर यति होती है) ॥ १०२ ॥

त्री रजौ गलौ भवेदिहेदृशेन लक्षणेन वृत्तनाम ॥ १०३ ॥

(वृत्त) प्रत्येक चरणमें क्रमसे यदि एक रगण, जगण, रगण, जगण और रगण जगण तथा गुरु और लघु हों तो, उसे 'वृत्त' वृत्त कहते हैं। (छः सात और सातपर यति होती है) ॥ १०३ ॥

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ॥ १०४ ॥

(स्रग्धरा) प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण हों तो, वह 'स्रग्धरा' छन्द कहा जाता है। (सात, सात और सातपर यति होती है) ॥ १०४ ॥

भ्रौ नरना रनावथ गुरुर्दिगर्कविरमं हि भद्रकमिति ॥१०५॥

(भद्रक) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक भगण, रगण, नगण, रगण, नगण, रगण और नगण एक गुरु हो तो, वह 'भद्रक' छन्द कहा जाता है। (दश और बारह पर यति होती है) ॥ १०५ ॥

यदिह नजौ भजौ भजभलगास्तदश्वललितं हरार्कयतिमत् ॥१०६॥

(अश्वललित) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक नगण, जगण, भगण,

जगण, भगण, जगण, भगण, लघु और एक गुरु हो तो, वह 'अश्वललित' छन्द कहा जाता है । (एकादश और द्वादशपर यति जानना चाहिये) ॥ १०६ ॥

मत्ताक्रीडा मौ त्नौ नौ नलिगिति भवति वसुशरदशयतियुता ॥ १०७ ॥

(मत्ताक्रीड़ा) प्रत्येक पादमें क्रमसे दो मगण, एक तगण, चार नगण एक लघु और गुरु हो तो, वह 'मत्ताक्रीड़ा' छन्द कहा जाता है । (आठ, पांच और दशपर यति होती है) ॥ १०७ ॥

भूतमुनीनैर्यतिरिह भतनाः स्भौ भनयाश्च यदि भवति तन्वी ॥१०८॥

(तन्वी) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक भगण, तगण, नगण, सगण, दो भगण, नगण और यगण हो तो, वह 'तन्वी' वृत्त कहा जाता है । (पांच, सात और बारहपर यति होती है । पिंगलाचार्य बारह-बारहपर यति कहते हैं) ॥

क्रौञ्चपदा भ्मौ भ्सौ ननगा न्गाविषुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत् ॥१०९॥

प्रत्येक पादमें यदि क्रमसे एक भगण, मगण, सगण, भगण, चार नगण और एक गुरु हो तो, वह 'क्रौञ्चपदा' छन्द कहा जाता है । (पांच, पांच, आठ और सातपर विराम करना चाहिये) ॥ १०९ ॥

वस्वीन्नाश्वच्छेदोपेतं ममतनयुगनरसलगैर्भुजङ्गविजृम्भितम् ॥ ११० ॥

(भुजंगविजृम्भित) प्रत्येक पादमें क्रमसे दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक रगण, एक सगण, एक लघु और एक गुरु हो तो, वह 'भुजंगविजृम्भित' छन्द कहा जाता है । (आठ, एकादश और सातपर यति होती है) ॥ ११० ॥

मो नाः षट् सगगिति यदि नवरसरसशरयतियुतमपवाहाख्यम् ॥१११॥

(अपवाह) प्रत्येक चरणमें यदि क्रमसे एक मगण, छः नगण, एक सगण और दो गुरु हों तो, वह 'अपवाह' छन्द कहा जाता है । (नौ, छः, छः और पांचपर यति होती है) ॥ १११ ॥

यदि ह नयुगलं ततः सप्त रेफास्तदा चण्डवृष्टिप्रपातो भवेद्दण्डकः ॥११२॥

(चण्डवृष्टिप्रपात) यदि क्रमसे दो नगणोंके अनन्तर सात रगण हों तो, वह 'चण्डवृष्टिप्रपात' दण्डक नामसे कहा जाता है ॥ ११२ ॥

प्रतिचरणविवृद्धरेफाः स्युरर्णार्णव-
व्यालजीमूतलीलाकरोद्दामशङ्खादयः ॥ ११३ ॥

(अर्ण दण्डक) यदि क्रमसे दो नगणोंके पश्चात् आठ रगण हों तो, वह 'अर्ण' दण्डक कहा जाता है । इसी प्रकार दो नगणके बाद नव रगण हों तो

'अर्णव दण्डक', दो नगणके बाद दश रगण हो, 'व्याल', दो नगणके बाद ग्यारह रगण 'जीमूत', दो नगणके बाद बारह रगण 'लीलाकर', दो नगणके बाद तेरह रगण 'उद्दाम', दो नगण के बाद चौदह रगण 'शंख' होता है। इसी तरह और भी जानना चाहिये ॥ ११३ ॥

प्रचितकसमभिधो धीरधीभिः स्मृतो दण्डको नद्वयादुत्तरः सप्तभिर्यैः ॥११४॥

इति श्रीकेदारभट्टविरचिते वृत्तरत्नाकरे तृतीयोऽध्यायः ॥

(प्रचितक दण्डक) यदि क्रमसे दो नगणोंके पश्चात् सात यगण हों तो, वह 'प्रचितक दण्डक' कहा जाता है। ऐसा छन्दःशास्त्रविशारदोंका कथन है ॥ ११४ ॥

इस प्रकारसे वृत्तरत्नाकर तृतीय अध्याय की 'मणिमयी' हिन्दी टीका समाप्त हुई।

चतुर्थोऽध्यायः

विषमे यदि सौ सलगा दले भौ युजि भाद् गुरुकावुपचित्रम् ॥ १ ॥

(उपचित्र) विषम पादमें—पहले और तीसरे पादोंमें—यदि क्रमसे तीन सगण तथा एक लघु और एक गुरु हो। सम पादोंमें—दूसरे और चौथे पादोंमें—यदि क्रमसे तीन भगण और दो गुरु हों तो, वह 'उपचित्र' वृत्त कहा जाता है ॥

भत्रयमोजगतं गुरुणी चेद्युजि च नजौ ज्ययुतौ द्रुतमध्या ॥ २ ॥

(द्रुतमध्या) विषम चरणोंमें—पहले और तीसरे चरणोंमें—यदि क्रमसे तीन भगण और दो गुरु हों। सम चरणोंमें—दूसरे और चौथे चरणोंमें—यदि क्रमसे एक नगण दो जगण तथा एक यगण हो तो, उसे 'द्रुतमध्या' छन्द कहते हैं ॥ २ ॥

सयुगात्सगुरू विषमे चेद्भाविह वेगवती युजि भाद्गौ ॥ ३ ॥

(वेगवती) विषम पादोंमें—पहले और तीसरे पादोंमें—यदि क्रमसे तीन सगण एक गुरु हो। सम पादोंमें—दूसरे और चौथेमें—यदि क्रमसे तीन भगण और दो गुरु हों तो, वह 'वेगवती' छन्द कहा जाता है ॥ ३ ॥

ओजे तपरौ जरौ गुरुश्चेन्म्सौ ज्गौ भद्रविराड् भवेदनोजे ॥ ४ ॥

(भद्रविराट्) विषम चरणोंमें यदि क्रमसे तगण, जगण, रगण और एक गुरु हो तथा सम चरणोंमें क्रमसे मगण, सगण, जगण और दो गुरु हों तो वह 'भद्रविराट्' छन्द कहा जाता है ॥ ४ ॥

असमे सजौ सगुरुयुक्तौ केतुमती समे भरनगाद् गः ॥ ५ ॥

(केतुमती) विषम पादोंमें यदि क्रमसे सगण, जगण, सगण और एक गुरु हो । सम पादोंमें भगण, रगण, नगण और दो गुरु हों तो, वह 'केतुमती' वृत्त कहा जाता है ॥ ५ ॥

आख्यानकी तौ जगुरू ग ओजे जतावनोजे जगुरू गुरुश्चेत् ॥ ६ ॥

(आख्यानकी) विषम चरणोंमें यदि क्रमसे दो तगण, एक जगण और दो गुरु हों । सम चरणोंमें यदि क्रमसे जगण, तगण, जगण और दो गुरु हों तो, वह 'आख्यानकी' छन्द कहा जाता है ॥ ६ ॥

जतौ जगौ गो विषमे समे चेत्तौ ज्गौ ग एषा विपरीतपूर्वा ॥ ७ ॥

(विपरीतपूर्वा) विषम पादोंमें यदि क्रमसे जगण, तगण, जगण और दो गुरु हों । सम पादोंमें यदि क्रमसे दो तगण, जगण और दो गुरु हों तो, वह 'विपरीतपूर्वा' छन्द कहा जाता है ॥ ७ ॥

सयुगात्सलघू विषमे गुरुर्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ॥ ८ ॥

(हरिणप्लुता) विषम चरणोंमें यदि क्रमसे तीन सगण, एक लघु और एक गुरु हों । सम चरणोंमें यदि क्रमसे एक नगण दो भगण और एक रगण हो तो, वह 'हरिणप्लुता' वृत्त कहा जाता है ॥ ८ ॥

अयुजि ननरला गुरुः समे न्जमपरवक्त्रमिदं ततो जरौ ॥ ९ ॥

(अपरवक्त्र) विषम पादोंमें यदि क्रमसे दो नगण, एक रगण, एक लघु और एक गुरु हो । सम पादोंमें एक नगण, दो जगण, एक रगण हो तो, वह 'अपरवक्त्र' छन्द कहा जाता है ॥ ९ ॥

अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ॥ १० ॥

(पुष्पिताग्रा) विषम चरणोंमें यदि क्रमसे दो नगण, एक रगण और एक यगण हो । सम चरणोंमें यदि क्रमसे एक नगण, दो जगण, एक रगण और एक गुरु हो तो, वह 'पुष्पिताग्रा' छन्द कहा जाता है ॥ १० ॥

वदन्त्यपरवक्त्राख्यं वैतालीयं विपश्चितः ॥
पुष्पिताग्राभिधं केचिदौपच्छन्दसिकं तथा ॥ ११ ॥

(औपच्छन्दसिक) विषम पादोंमें यदि क्रमसे रगण, जगण, रगण और जगण हो । सम पादोंमें यदि क्रमसे जगण, रगण, जगण और रगण तथा एक गुरु हो तो, वह 'औपच्छन्दसिक' छन्द कहा जाता है ॥ ११ ॥

स्यादयुग्मके रजौ रयौ समे चेज्जरौ जरौ गुरुर्यवात्परा मतीयम् ॥ १२ ॥

इति श्रीकेदारभट्टविरचिते वृत्तरत्नाकरे चतुर्थोऽध्यायः ।

(यवमती) विषम चरणोंमें यदि क्रमसे रगण, जगण, रगण और यगण हो। सम चरणोंमें यदि क्रमसे जगण, रगण, जगण, रगण और एक गुरु हो तो, वह 'यवमती' छन्द कहा जाता है ॥ १२ ॥

इस प्रकारसे वृत्तरत्नाकर चतुर्थ अध्यायकी 'मणिमयी' हिन्दी टीका समाप्त हुई।

पञ्चमोऽध्यायः

मुखपादोऽष्टभिर्वर्णैः परे स्युर्मकरालयैः क्रमाद् वृद्धैः ॥
सततं यस्य विचित्रैः पादैः सम्पन्नसौन्दर्यं
तदुदितममलमतिभिः पदचतुरूर्ध्वाभिधं वृत्तम् ॥ १ ॥

जिस वृत्तका पहला चरण आठ अक्षरोंवाला हो, दूसरा चरण बारह अक्षरोंवाला हो, तीसरा चरण सोलह अक्षरोंवाला हो और चौथा चरण बीस अक्षरोंवाला हो वह 'पदचतुरूर्ध्व' छन्द कहा जाता है। इस प्रकारके छन्दमें केवल रचना सौन्दर्य पर विशेष ध्यान रखा जाता है, गुरुलघुपर ध्यान नहीं रखा जाता है ॥ १ ॥

प्रथमसुदितवृत्ते विरचितविषमचरणभाजि ॥
गुरुकयुगलनिधन इह सहित आङा
लघुविरचितपदक्तितियतिरिति भवति पीडः ॥ २ ॥

(आपीड) यदि कथित पद चतुरूर्ध्व वृत्तके प्रति चरणमें अन्तके दो अक्षर गुरु कर दें तो, उसे 'आपीड' वृत्त जानना चाहिये ॥ २ ॥

प्रथममितरचरणसमुत्थं श्रयति स यदि लक्ष्म ॥
इतरदितरगदितमपि यदि च तुर्यं
चरणयुगलकमविकृतमपरमिति कलिका सा ॥ ३ ॥

(कलिका) जिस वृत्तके प्रथम चरणमें बारह अक्षर, द्वितीयमें आठ अक्षर, तृतीयमें सोलह अक्षर और चतुर्थमें बीस अक्षर हों वह 'कलिका' वृत्त कहा जाता है। इसे पिंगलाचार्यने 'मंजरी' नामक छन्द कहा है। अर्थात्-आपीड छन्दके प्रथम पाद द्वितीय पादके स्थान और द्वितीय पाद प्रथम पादके स्थान तथा तीसरे और चौथे अपने स्थानपर रहें तो, उसे 'कलिका' जानना चाहिये ॥३॥

द्विगुरुयुतसकलचरणान्ता मुखचरणगतमनुभवति च तृतीयः ॥
अपरमिह हि लक्ष्म प्रकृतमखिलमपि यदिदमनुभवति लवली सा ॥ ४ ॥

(लवली) जिस वृत्तके पहले चरणमें बारह अक्षर और दूसरेमें आठ अक्षर तथा तीसरेमें आठ अक्षर और चौथेमें बीस अक्षर हों वह 'लवली' छन्द है । आपीडकी तरह इसके प्रत्येक चरणके अन्तमें दो गुरु अक्षर होवें ॥ ४ ॥

प्रथममधिवसति यदि तुर्यं, चरमचरणपदमवसितगुरुयुग्मम् ॥
निखिलमपरमुपरिगतमिति, ललितपदयुक्ता तदिदममृतधारा ॥५॥

(अमृतधारा) जिस छन्दके प्रथम पादमें बारह, द्वितीय पादमें सोलह, तृतीय पादमें बीस और चतुर्थपादमें आठ अक्षर होवें वह 'अमृतधारा' छन्द है । आपीडकी तरह प्रतिपादके अन्तमें दो गुरु होना चाहिये ॥ ५ ॥

सजसादिमे सलघुकौ च नसजगुरुकैरथोद्गता ॥
त्र्यङ्घ्रिगतभनजला गयुताः सजसा जगौ चरणमेकतः पठेत् ॥६॥

(उद्गता) जिस वृत्तके पहले चरणमें क्रमसे सगण, जगण, सगण और एक लघु हो, दूसरेमें नगण, सगण, जगण और एक गुरु हो, तीसरेमें भगण, नगण, जगण एक लघु और एक गुरु हो, चौथे चरणमें सगण, जगण, सगण, जगण और एक गुरु हो उसे 'उद्गता' वृत्त कहते हैं । किन्तु, यह वृत्त प्रथम और द्वितीय चरण विना विराम के—एक साथ—पढ़ा जाता है ॥ ६ ॥

चरणत्रयं व्रजति लक्ष्म यदि सकलमुद्गतागतम् ॥
नौ भगौ भवति सौरभकं चरणे यदीह भवतस्तृतीयके ॥ ७ ॥

(सौरभक) जिस वृत्तके तीसरे चरणमें क्रमसे रगण, नगण, भगण और एक गुरु हो तथा शेष चरण 'उद्गता' के समान लक्षण हो वह 'सौरकभ' वृत्त कहा जाता है ॥ ७ ॥

नयुगं सकारयुगलं च भवति चरणे तृतीयके ॥
तदुदितमुरुमतिभिर्ललितं यदि शेषमस्य खलु पूर्वतुल्यकम् ॥८॥

(ललित) जिस छन्दके तीसरे पादमें क्रमसे दो नगण और दो सगण हो तथा शेष पाद 'उद्गता' के लक्षणयुक्त हो तो वह 'ललित' वृत्त कहा जाता है ॥८॥

म्सौ ज्भौ गौ प्रथमाङ्घ्रिरेकतः पृथगन्यत्त्रितयं सनजरगास्ततो नलौ सः ॥
त्रिनपरिकलितजयौ प्रचुपितमिदमुदितमुपस्थितपूर्वम् ॥ ९ ॥

(उपस्थित प्रचुपित) जिस वृत्तके प्रथम चरणमें क्रमसे मगण, सगण, जगण, भगण और दो गुरु हो, द्वितीय चरणमें सगण, नगण, जगण, रगण और एक गुरु हो, तृतीय पादमें दो नगण और एक सगण हो और चतुर्थ पादमें

तीन नगण, जगण और यगण हो तो, वह 'उपस्थित प्रचुपित' छन्द कहा जाता है। इस वृत्तको पढ़ने की प्रणाली यह है कि प्रथम चरण अलग पढ़ा जाता है और तीनों चरण एक साथ पढ़े जाते हैं ॥ ९ ॥

नौ पादेऽथ तृतीयके सनौ नसयुक्तौ प्रथमाङ्घ्रिकृतयतिस्तु वर्धमानम् ॥
त्रितयमपरमपि पूर्वसदृशमिह भवति प्रततमतिभिरिति गदितं लघु वृत्तम् ॥

(वर्द्धमान) जिस वृत्तके तीसरे चरणमें क्रमसे दो नगण, सगण दो नगण और एक सगण हो तथा शेषके तीनों चरण 'उपस्थितप्रचुपित' के समान होवें तो, वह 'वर्द्धमान' वृत्त कहा जाता है। इसे पढ़नेकी प्रणाली वही है कि प्रथम पादपर विराम करके शेष तीन बाद एक साथ पढ़ना चाहिये ॥ १० ॥

अस्मिन्नेव तृतीयके यदा तजराः स्युः प्रथमे च विरतिरार्षभं ब्रुवन्ति ॥
तच्छुद्धविराट् पुरः स्थितं त्रितयमपरमपि यदि पूर्वसमं स्यात् ॥ ११ ॥

(शुद्धविराट्) जिस वृत्तके तीसरे चरणमें क्रमसे तगण, जगण, रगण हों तथा शेष तीनों चरण 'उपस्थितप्रचुपित' के समान हों तो, वह 'शुद्धविराट्' वृत्त कहा जाता है। इस छन्दकी पठनप्रणाली दो प्रकार की है—एक तो, प्राचीनोंके मतसे 'वर्द्धमान' की तरह दूसरी प्रत्येक चरणपर यति करके पढ़ने की है ॥ ११ ॥

विषमाक्षरपादं वा पादैरसमं दशधर्मवत् ॥
यच्छन्दो नोक्तमत्र गाथेति तत्सूरिभिः प्रोक्तम् ॥ १२ ॥

इति श्रीकेदारभट्टविरचिते वृत्तरत्नाकरे पञ्चमोऽध्यायः।

(गाथा) जिन छन्दोंका वर्णन इसमें नहीं * किया गया है, जिन वृत्तोंमें विषमाक्षरवाले चरण हो अथवा विषमचरणवाले वृत्त ही जहां हो वह 'दशधर्म' के समान 'गाथा' जानना चाहिये ॥ १२ ॥

इस प्रकार से वृत्तरत्नाकर पञ्चम अध्यायकी 'मणीमयी' हिन्दी टीका समाप्त हुई।

---

* नोटः—उन छन्दोंके ज्ञानको बतलाते हैं जो इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये हैं। किन्तु अन्यत्र देखे जाते हैं जैसे महाभारतके उद्योगपर्वमें विदुरनीति नामक प्रकरणमें 'दशधर्मम्' आदि श्लोक पाये जाते हैं वे तथा जिन वृत्तोंमें चारसे अधिक पाद हों वे तथा जो प्रत्येक पादमें सम अक्षरके नहीं हों वे तथा जिनमें गुरु-लघुकी ओर ध्यान न दिया गया हो वे सब वृत्त नहीं कहलाते हैं वे सब 'गाथा' में परिगणित हैं। नाटकोंकी नान्दी भी गाथा ही है।

षष्ठोऽध्यायः

प्रस्तारो नष्टमुद्दिष्टमेकद्व्यादिलगक्रिया ॥
सङ्ख्यानमध्वयोगश्च षडेते प्रत्ययाः स्मृताः ॥ १ ॥

तीन प्रकारके समादिवृत्तोंका निरूपण करके अब उनके आविर्भावके ज्ञानार्थ और अनुक्त वृत्तोंके स्वरूपबोधनार्थं इस षष्ठ अध्यायमें क्रमसे प्रस्तार प्रभृति छः प्रत्ययोंके विषयमें कहते हैं। प्रथम प्रस्तार, द्वितीय नष्ट, तृतीय उद्दिष्ट, चतुर्थ एकद्व्यादिलगक्रिया, पञ्चम संख्या और षष्ठ अध्वयोग ॥ १ ॥

पादे सर्वगुरावाद्याल्लघुं न्यस्य गुरोरधः ॥
यथोपरि तथा शेषं भूयः कुर्यादमुं विधिम् ॥ २ ॥

प्रस्तारकी क्रिया यह है कि सर्व गुरु चरणमें प्रथम गुरुके नीचे लघु लिखना चाहिये। पुनः दाहिनी ओरकी रेखा (पंक्ति) ऊपरकी रेखाके समान भर दे अर्थात् शेष स्थानोंमें ऊपरके अनुसार गुरु, लघु आदि भर दे ॥ २ ॥

ऊने दद्याद् गुरूनेव यावत्सर्वलघुर्भवेत् ॥
प्रस्तारोऽयं समाख्यातश्छन्दोविचितिवेदिभिः ॥ ३ ॥

उपर्युक्त विधि करते हुए रिक्त स्थानमें अर्थात् बाएं ओरके शेष स्थानमें गुरु ही लिखे यह क्रिया तबतक करता रहे जबतक कि सभी लघुकी प्राप्ति न हो जाय। छन्दःशास्त्रियोंने इस विधिको 'प्रस्तार' कहा है ॥ ३ ॥

नष्टस्य यो भवेदङ्कस्तस्यार्धेऽर्धे समे च लः ॥
विषमे चैकमाधाय स्यादर्धेऽर्धे गुरुर्भवेत् ॥ ४ ॥

नष्टवृत्तका अंक यदि सम अर्थात् २–४ हो तो, प्रथम लघु लिखना चाहिये। यदि नष्ट* वृत्तका अङ्क विषम अर्थात् ३–५ हो तो, प्रथम गुरु लिखना चाहिये। इसी प्रकार वृत्तके समाप्तितक उसे आधा-आधा करते जाना चाहिये। यदि अर्धभाग सम हो तो लघु लिखना चाहिये और विषम हो तो, गुरु लिखना

---

* किसी प्रस्तारका स्वरूप जानना हो किन्तु उसका भेद ज्ञान न हो तो, उसे निकालनेकी विधिको 'नष्टप्रत्यय' रीति कहते हैं।

चाहिये। इसके पश्चात् पुनः विषम आधा नहीं हो सकता है अतः उसमें एक और जोड़कर सम बनाना चाहिये और फिर उसे आधा करना चाहिये। यथा किसीके द्वारा पूछा जाय कि तीन अक्षरवाले वृत्तका पांचवा भेद क्या है ? तो, उत्तर इस प्रकार देना चाहिये—पांचवां अङ्क विषम है अतः एक गुरु प्रथम होगा। फिर पांचमें एक और जोड़कर छः बनाया अतः छः का आधा तीन हुआ वह भी विषम है अतः फिर गुरु लिखा। तीन भी विषम है अतः एक और जोड़कर चार किया चारका आधा दो सम है, अतः एक लघु लिखा। तीन ही अक्षरकी जातिके वृत्तका प्रश्न था यहां भी अब तीन अक्षर (ऽ ऽ ।) पूरे हो गये। अब यहीं यह क्रिया समाप्त करके उत्तर दे देना चाहिये कि तीन अक्षर वाले वृत्तका पांचवां भेद प्रथम दो गुरु तथा फिर एक लघु होता है। इसी प्रकार चार अक्षरकी चौथी जाति क्या होगी ? इसमें चार सम है। अतः प्रथम लघु फिर चारका आधा दो सम है अतः फिर लघु फिर दो का आधा एक विषम है अतः गुरु फिर एक आधा नहीं हो सकता अतः एक और जोड़कर आधा किया तो फिर गुरु आया और (।।ऽऽ) दो लघु तथा दो गुरु उत्तर आये। इसी तरह अन्य वृत्त जानना चाहिये ॥ ४ ॥

उद्दिष्टं द्विगुणानाद्यादुपर्यङ्कान्समालिखेत् ॥
लघुस्था ये च तत्राङ्कास्तैः सैकैर्मिश्रितैर्भवेत् ॥ ५ ॥

(उद्दिष्ट प्रस्तार) उद्दिष्ट प्रस्तारका प्रकार निम्नांक रीतिसे है—जैसे किसीने (।। ऽ) ऐसा लिखकर पूछा कि त्यक्षर जातिके प्रस्तारमें यह अन्त्य गुरु वाला कौनसा विभाग है ? तब दूसरेने जोड़कर उत्तर दिया कि त्यक्षरमें चतुर्थ विभाग-वाला है—जोड़नेकी प्रणाली क्या है ?—

उद्दिष्ट प्रस्तारका कोई भी प्रथम अक्षर चाहे वह गुरु हो अथवा लघु हो उसके ऊपर (१) अङ्क रखना चाहिये फिर उसके पश्चात् वालेपर एकसे दूना अङ्क (२) रखना चाहिये। ततः दोसे दूना अङ्क चार रखना चाहिये और इस तरह रखकर उसमें जितने लघु हों उन्हें जोड़कर तथा उसमें एक मिलाकर जो संख्या आवे, उसी विभागवाला भेद बताना चाहिये। जैसे यहांके उदाहरणमें दो लघु और एक गुरु है दो लघुपर क्रमसे १ और २ संख्या रखी है। गुरुपर चारकी संख्या है। गुरुकी संख्या छोड़ दी और दोनों लघुकी संख्या जोड़ दीं तो १ + २ = ३ हुए तीनमें एक और जोड़ा तो चार हुए ३ + १ = ४

अतः उत्तर आगया कि त्र्यक्षर जातिमें चौथे विभागका यह भेद है। इसी तरह और भी जानना चाहिये ॥ ५ ॥

वर्णान् वृत्तभवान् सैकानौत्तराधर्यतः स्थितान् ।
एकादिक्रमतश्चैतानुपर्युपरि निक्षिपेत् ॥ ६ ॥

(एकद्व्यादिलगक्रिया) प्रस्तारोंके अनेकों तरहके भेदोंमें प्रत्येककी आकृति ज्ञानको कहते हैं कि किसमें कितने गुरु और कितने लघु हैं। ऐसी जाननेवाली प्रक्रियाका नाम एकद्व्यादिलघुक्रिया है ॥ ६ ॥

उपान्त्यतो निवर्तेत त्यजन्नेकैकमूर्ध्वतः ॥
उपर्याद्याद् गुरोरेकमेकद्व्यादिलगक्रिया ॥ ७ ॥

(लिखनेका प्रकार) प्रथम छन्दके वर्णोंकी जो संख्या होवे उसमें एक अधिक जोड़कर उतने ही एकांक लिखे। उन एक-एक अङ्कोंको ऊपरकी अन्य रेखामें जोड़ दे। किन्तु अन्त्यके समीपमें रहनेवाले अङ्कको न मिलावे और ऊपरके एक-एकको त्याग देवे। उन त्यागे हुए अङ्कोंमें ऊपरके सर्वगुरु पहले भेदमें नीचे तक गिने। इस रीतिसे प्रथम भेद सर्व गुरु, दूसरा भेद एक गुरु, तृतीय भेद द्विगुरु होता है। इसी तरह नीचेसे ऊपरकी ओर ध्यान करनेसे सबसे नीचेका सर्व लघु उसके ऊपरका एक लघु, तृतीय भेद द्विलघु आदि संस्कृत टीकामें बताये चित्रसे स्पष्ट करना चाहिये ॥ ७ ॥

लगक्रियाङ्कसन्दोहे भवेत्सङ्ख्या विमिश्रिते ॥
उद्दिष्टाङ्कसमाहारः सैको वा जनयेदिमाम् ॥ ८ ॥

(संख्या) यदि लगक्रियाके फलित अङ्क समुदायको आपसमें जोड़ दें तो, संख्या निकल आवेगी। अथवा, उद्दिष्टके अङ्कोंमें एक और जोड़ देनेसे संख्या निकल आती है। जैसे १ + ३ + ३ + १ = ८।

सङ्ख्यैव द्विगुणैकोना सद्भिरध्वा प्रकीर्तितः ॥
वृत्तस्याङ्गुलिकी व्याप्तिरधः कुर्यात्तथाङ्गुलिम् ॥ ९ ॥

(अध्वा) यदि वृत्तभेदकी संख्याको दूनी कर दें और उसमेंसे एक घटा दें तो अध्वा क्रिया कही जाती है। इसकी उपपत्ति यह है कि एक अङ्गुलपरिमित वृत्तकी चौड़ाई हो और उसके नीचे एक अङ्गुल चौथी जगह खाली छोड़ दे जैसा संस्कृत टीकाके चित्रमें दिया गया है ॥ ९ ॥

वंशेऽभूत्कश्यपस्य प्रकटगुणगणः शैवसिद्धान्तवेत्ता
विप्रः पव्येकनामा विमलतरमतिर्वेदतत्त्वार्थबोधे ॥
केदारस्तस्य सूनुः शिवचरणयुगाराजनैकाग्रचित्त-
श्छन्दस्तेनाभिरामं प्रविरचितमिदं वृत्तरत्नाकराख्यम् ॥ १० ॥

इति श्रीकेदारभट्टविरचिते वृत्तरत्नाकरे षष्ठोऽध्यायः ।

इस प्रकारसे शौचाचारादि श्रेष्ठ गुणवाला शैवसिद्धान्त वेत्ता कश्यपकुलोद्भव वेदसे प्रतिपादित अद्वैतरूप माननेवाला शुद्धप्रज्ञावाला पव्येक नामका विप्र उत्पन्न हुआ। भगवान् शङ्करकी आराधनामें एकाग्र चित्तनिष्ठ विप्रके पुत्र श्रीकेदारजीने इस मनोहर एवं शीघ्र बोध करानेवाला 'वृत्तरत्नाकर' नामक छन्दोग्रन्थकी रचना की है ॥ १० ॥

इस प्रकारसे पं० श्रीकेदारनाथ शर्मा विरचित 'मणिमयी' नामक
हिन्दी टीका समाप्त हुई ।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः

C. मुद्रकः—विद्याविलास प्रेस, बनारस सिटी। १९५४ ई०